an>

title: Need to conduct sessions of Parliament of India at four prominent metro cities of the country.

श्री राजीव सातव (हिंगोली) ः यह हमारे लिए गर्व और उत्साह की बात है कि अपनी स्वतंत्रता के इतने समय के बावजूद देश के अंदर मौजूद विभिन्न तरह की विविधता ने कभी हमारी एकता को संकीर्ण नहीं किया है। साथ ही हमारी सदभावना और हमारे राष्ट्रीय संस्कार कभी धूमिल नहीं पड़े हैं। हम एक राष्ट्र के रूप में एक संप्रभु गणतंत्र के रूप में आज भी उतने ही जीवंत है, जैसा कभी नेहरू जी ने कल्पना की थी।

यह सत्य है कि हमारी विविधता और हमारी राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और वैचारिक राष्ट्रीयता की भावना हमेशा भारतीय नागरिकों के लिए आदर्श रहे हैं, किंतु कुछ चीजें ऐसी हैं जिनका प्रभाव परोक्ष रूप से देश पर पड़ता है, किंतु उनका संज्ञान हम नहीं ले पाते।

कुछ ऐसा ही एक मुद्दा हमारे देश में संवैधानिक संस्थाओं की अवस्थिति के संबंध में है। देश की सर्वोच्च संस्था और राष्ट्र का प्रमुख मंदिर जिसे हम संसद कहते हैं वह देशभर के लिए सम्मानीय है। देशभर से लोग सत्र के दौरान और सत्र अंतराल में भी इसे देखने आते रहते हैं। देश की जनता की निगाहें संसदीय क्रियाकलापों और इसके बाद में जिज्ञासु प्रवृत्ति दर्शाती है।

क्या हमारा यह दायित्व नहीं बनता कि हम देश की जनता की भावनाओं और दूरियों के कारण जो भावनात्मक लगाव में वृद्धि नहीं हो पाती उसका समाधान निकालें। क्या हम देश के प्रत्येक भागों तक इसको पहुंचाने का प्रयास नहीं कर सकते। हम संसद भवन को पूरे देश में नहीं भेज सकते, किंतु सदन के सत्र को देश के विभिन्न जगहों में आयोजित कर भावनात्मक और राष्ट्रीय एकता का संदेश तो दे ही सकते हैं। इसका सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि चार भुजाओं से घिरा भारतवर्ष अपनी राष्ट्रीय और संघीय एकता का एक ज्वलंत और गतिशील आदर्श प्रस्तुत करेगा। संसद के सत्र यदि देश के चार महानगरों में भी बारी-बारी से आयोजित किये जाते हैं तो यह एक बेहतर पहल कही जायेगी। साथ ही, हम विकेंद्रीकरण की बात करते हैं, क्या हम केवल केंद्र में रहकर देश में यह संदेश भेज सकते हैं कि हम आखिरी पायदान तक पहुंच बना रहे हैं? क्या विकेंद्रीकृत व्यवस्था में हम अपने संसदीय सत्र को अन्य शहरों में आयोजित कर एक नया प्रभावशाली इतिहास कायम नहीं करेंगे?

अतः उपरोक्त मुद्दे पर सरकार पर आवश्यक कार्यवाही करने की मांग करता हूँ ताकि देश की बहुसंख्य आबादी के मनोभावों के साथ ही हमारी संसदीय परंपरा और राष्ट्रीयता की सर्वोच्च संस्था देशभर को भावनात्मक रूप से जोड़े।